

कोषागार तथा रोकड़ प्रबन्ध (TREASURY AND CASH MANAGEMENT)

10.7 कोषागार प्रबन्ध : अर्थ (Treasury Management : Meaning)

अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के फलस्वरूप प्रतियोगी व्यवसाय वातावरण की जागरूकता से रोकड़ के वैज्ञानिक प्रबन्धन पर बल दिया गया है। ऊँची ब्याज दरों, विदेशी विनिमय उच्चावचनों तथा वित्तीय व्यवहारों की बढ़ती मात्रा के साथ कोषों की माँग के विस्तार ने मुद्रा के कुशल प्रबन्ध को आवश्यक कर दिया है।

कोषागार प्रबन्ध को सभी वित्तीय विषयों के निगमीय व्यवहार, व्यवसाय के आन्तरिक एवं बाह्य कोषों के सृजन, मुद्रा और रोकड़ प्रवाह का प्रबन्ध तथा निगम वित्त के मिश्रण, व्यूहरचना, नीतियों और प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया जाता है।

कोषागार प्रबन्ध मुख्यतः सम्बन्धित है—

- कार्यशील पूँजी का प्रबन्ध, और
- वित्तीय जोखिम प्रबन्ध (इसमें विदेशी मुद्रा तथा ब्याज दर प्रबन्धन शामिल हैं)।

कोषागार प्रबन्धन के मुख्य लक्ष्य हैं—

- उपलब्ध रोकड़ पर प्रत्याय को अधिकतम करना,
- उधार पर ब्याज लागत को न्यूनतम करना,
- निगमीय उपक्रमों (आवश्यकता की दशा में) के लिए अधिकतम सम्भव रोकड़ को गतिमान करना,
- विनियम दरों, ब्याज दरों तथा मूल्यों में उतार-चढ़ाव के कारण उत्पन्न जोखिमों को कम करने के लिए विदेशी विनिमय, मुद्रा एवं वस्तु बाजारों में प्रभावी व्यवहार, जो संगठन की लाभदायकता को प्रभावित कर सकता है।

10.8 कोषागार विभाग के कार्य (Functions of Treasury Department)

1. **रोकड़ प्रबन्ध (Cash Management)**—इसमें संगठन के अन्दर तथा तीसरे पक्षों दोनों को रोकड़ भुगतान का प्रबन्धन तथा रोकड़ एकत्रण की कुशल प्रक्रिया शामिल है।

किसी समूह ट्रेजरी में पूर्ण केन्द्रीकरण हो सकता है अथवा ट्रेजरी अपने सहायकों या विभागों को नीति मामलों (एकत्रण/भुगतान अवधि, कटौतियाँ इत्यादि) पर सलाह मात्र दे सकती है। ट्रेजरी आधिक्य कोषों के निवेश पोर्टफोलियो प्रबन्ध करती है। विनियोग नीति तरल कोषों की भावी आवश्यकता तथा कम्पनी नीति द्वारा निर्धारित जोखिम के स्वीकार योग्य स्तर पर विचार करती है।

2. **मुद्रा प्रबन्ध (Currency Management)**—कोषागार विभाग कम्पनी के विदेशी मुद्रा जोखिम का प्रबन्ध करता है। एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी में, प्रायः आन्तरिक समूह ऋणों को चुकाना सर्वप्रथम चरण होता है। उसी मुद्रा में प्राप्तियों व भुगतानों का मिलान करने से विनिमय लागतों की बचत होती है। विदेशी बिक्री के बीजक तैयार करते समय कोषागार विभाग किस मुद्रा का प्रयोग किया जाना है, इस पर सलाह दे सकता है।
कोषागार विभाग कम्पनी नीति के अनुसार किसी शुद्ध विनिमय प्रकटन का प्रबन्ध करेगा। यदि जोखिमों को न्यूनतम किया जाना है तो या तो भावी मुद्रा खरीदने या बेचने के भावी अनुबन्ध किये जा सकते हैं।
3. **कोषों का प्रबन्धन (Funding Management)**—कोषागार विभाग कम्पनी के लघु, मध्यम व दीर्घावधि रोकड़ आवश्यकताओं के नियोजन एवं स्रोत व्यवस्था हेतु जिम्मेदार है। कोषागार विभाग पूँजी-संरचना पर निर्णय में भी भागीदार होगा और आगामी ब्याज व विदेशी मुद्रा दरों का पूर्वानुमान करेगा।
4. **बैंकिंग (Banking)**—यह महत्वपूर्ण है कि कम्पनी अपने बैंकरों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करे। कोषागार विभाग बैंकरों के साथ वार्तालाप करते हैं और उसके साथ प्रारम्भिक सम्पर्क के बिन्दु के रूप में कार्य करते हैं। लघु-अवधि वित्त, या तो बैंक ऋणों के रूप में या मुद्रा बाजार में वाणिज्यिक प्रपत्र बेचकर जुटाया जा सकता है।
5. **निगम वित्त (Corporate Finance)**—कोषागार विभाग समूह के भीतर अधिग्रहण व विनिवेश गतिविधियों दोनों में शामिल होता है। इसके अतिरिक्त प्रायः इस पर निवेशक सम्बन्धों की भी जिम्मेदारी रहती है। बाद की गतिविधि में बाजारों ने अधिक महत्व प्राप्त किया है जहाँ अंश मूल्य निष्पादन को महत्वपूर्ण समझा जाता है और जो कम्पनी की अधिग्रहण गतिविधि की योग्यता को प्रभावित कर सकता है। यदि मूल्य तेजी से गिरते हैं तो यह विरोधी निविदा के लिए आवश्यक हो जाता है।

10.9 रोकड़ का प्रबन्ध (Management of Cash)

रोकड़ का प्रबन्ध वित्त प्रबन्धक का एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह निम्न के प्रबन्धन से सम्बन्धित है—

- (i) रोकड़ प्रवाह—फर्म में आना एवं फर्म से जाना,
- (ii) फर्म के अन्दर रोकड़ प्रवाह,
- (iii) समय के एक बिन्दु पर रखा जाने वाला रोकड़ शेष (कमी की वित्त व्यवस्था या आधिक्य का विनियोग करके)।

एक व्यवसाय के लिए रोकड़ प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य हैं—

- इसकी प्रत्येक इकाई को पर्याप्त रोकड़ उपलब्ध कराना;
- व्यर्थ रोकड़ में कोई शेष न फँसे हों;
- आधिक्य रोकड़ (यदि कोई हो) व्यवसाय के लिए अधिकतम प्रत्याय के लिए विनियोजित होनी चाहिए।

अतः एक रोकड़ प्रबन्ध योजना तरलता एवं लागतों के दोहरे उद्देश्यों के मध्य एक नाजुक सम्बन्ध है।

10.9.1 रोकड़ की आवश्यकता (The Need for Cash)—लॉर्ड कीन्स द्वारा सुझाई गई रोकड़ की मात्रा या तरलता निर्धारित करने में निम्न तीन बातें हैं—

- **लेन-देन आवश्यकताएँ (Transaction needs)**—रोकड़ के द्वारा दिन-प्रतिदिन के खर्चों व उधारों पर दूसरे भुगतानों को पूरा करने में सहायता मिलती है। सामान्यतः परिचालनों से रोकड़ अन्तर्प्रवाह इस उद्देश्य के लिए पर्याप्त होने चाहिए। लेकिन कई बार यह अन्तर्प्रवाह अस्थायी रूप से रुक सकता है। इस प्रकार के मामलों में, यह मात्र संरक्षित रोकड़ शेष ही है जो कि फर्म को समय पर भुगतान करने के योग्य बनाता है।
- **परिकल्पक आवश्यकताएँ (Speculative needs)**—रोकड़ को आने वाले लाभप्रद अवसरों का लाभ उठाने के लिए भी रखा जाता है ताकि ये अवसर तैयार रोकड़/निपटान के बिना हाथ से न निकल जाएँ।
- **सतर्कता आवश्यकताएँ (Precautionary needs)**—रोकड़ को गैर-सम्भावित घटनाओं से लाभप्रद सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी रखा जा सकता है। एक कहावत के अनुसार सुरक्षा को वह व्यक्ति कहा जा सकता है जिसके मात्र तीन मित्र हैं—पुरानी बीबी, पुराना कुत्ता व बैंक में धन।

10.9.2 रोकड़ नियोजन (Cash Planning)—रोकड़ प्रबन्ध एक ऐसी तकनीक है, जिससे रोकड़ के प्रयोग को नियोजित एवं नियन्त्रित किया जाता है। यह एक दिये हुए समय में आशान्वित रोकड़ अन्तर्प्रवाह व बाह्य प्रवाह के पूर्वानुमान के द्वारा रोकड़ विवरण की योजना को विकसित करके फर्म की वित्तीय स्थिति को सुरक्षित करता है। यह एक समय अन्तराल पर हो सकता है; जैसे—दैनिक, साप्ताहिक व मासिक आधार पर। रोकड़ नियोजन की समय अवधि व आवृत्ति सामान्यतः फर्म के आकर व प्रबन्ध के दर्शन (Philosophy) पर निर्भर होती है। जैसे-जैसे फर्म विकसित होती है और व्यापार के कार्य जटिल होते हैं, निरन्तर सफलता के लिए रोकड़ नियोजन आवश्यक हो जाता है।

रोकड़ प्रबन्धन में पहला चरण है रोकड़ आवश्यकताओं का अनुमान लगाना। इस उद्देश्य के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण व रोकड़ बजट तैयार किए जाते हैं। रोकड़ प्रवाह व कोष प्रवाह विवरण को तैयार करने की तकनीक का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है और रोकड़ बजट को तैयार करने का प्रदर्शन इस अध्याय में किया गया है।

10.9.3 रोकड़ बजट (Cash Budget)—रोकड़ बजट रोकड़ की प्राप्ति एवं भुगतान के नियोजन एवं नियन्त्रण का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह बजट अवधि के दौरान व्यवसाय की रोकड़ आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

रोकड़ बजट के विभिन्न उद्देश्य हैं—

- रोकड़ आवश्यकताओं के समय तत्व को समन्वित करता है। यह उन अवधियों की पहचान करता है जब या तो रोकड़ की कमी हो सकती है या रोकड़ की असामान्य बड़ी आवश्यकता होगी।
- यह अवधियों को बताता है जब रोकड़ के आधिक्य होने की सम्भावना है।
- यह फर्म को, जिसके पास पर्याप्त रोकड़ है, देय खातों पर रोकड़ छूट का लाभ लेने योग्य बनाता है।

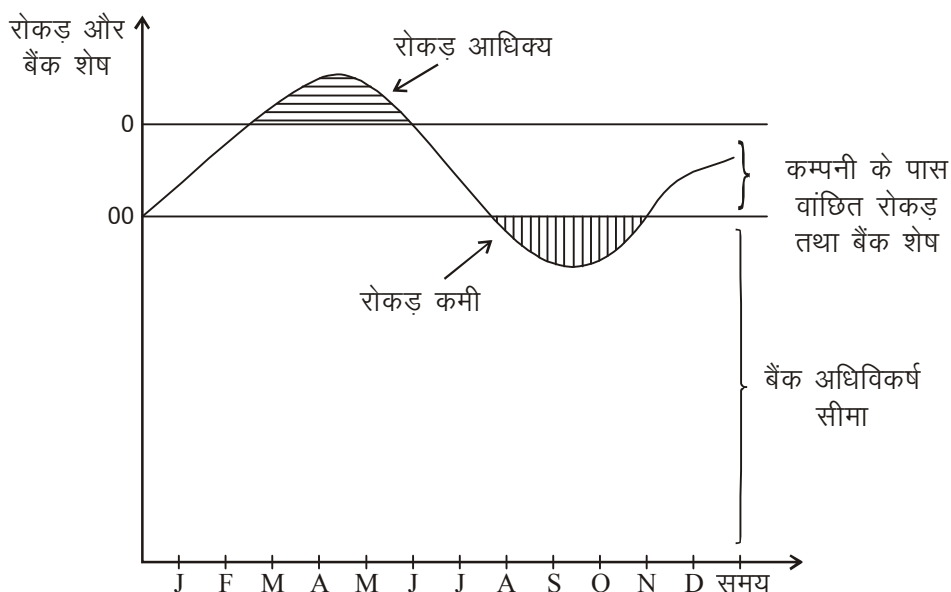
- अन्त में यह आवश्यक कोषों के लिए अनुकूल शर्तों पर पर्याप्त (रोकड़ की कमी/आधिक्य से बचते हुए) रोकड़ की व्यवस्था/योजना में सहायता करता है।

रोकड़ बजट के आधार पर फर्म रोकड़ आधिक्य को विपणन योग्य प्रतिभूतियों में विनियोजित करने का निर्णय ले सकती है और लाभ अर्जित कर सकती है।

रोकड़ बजट के मुख्य संघटक (Main Components of Cash Budget)—रोकड़ बजट की तैयारी में निम्न चरण शामिल होते हैं—

- बजट द्वारा आच्छादित समय अवधि का चयन। यह नियोजन परिधि को भी परिभाषित करता है।
- उन घटकों का चयन जो रोकड़ प्रवाह को प्रवाहित करते हैं। रोकड़ प्रवाह को उत्पन्न करने वाले घटकों को सामान्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—
 - परिचालन (फर्म के परिचालन से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह),
 - वित्तीय (फर्म की वित्तीय क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह)।

पूर्वनियोजन एवं रोकड़ बजट की अवधि के लिए निम्नलिखित चित्र रोकड़ आधिक्य तथा रोकड़ कमी की स्थिति पर प्रकाश डालता है, ताकि सही तथा आवश्यकता कदम उठाए जा सकें—



10.10 रोकड़ प्रवाह बजटन की विधियाँ (Methods of Cash Flow Budgeting)

रोकड़ बजट निम्न विधियों से तैयार किया जा सकता है।

- प्राप्त तथा भुगतान विधि (Receipts and Payments Method)**—इस विधि के अन्तर्गत बजट की अवधि की सभी अपेक्षित प्राप्तियों तथा भुगतान पर ध्यान दिया जाता है। कार्यात्मक बजट के सभी रोकड़ अन्तर्प्रवाह व बाह्य प्रवाह के साथ पूँजीगत व्यय बजट पर भी ध्यान दिया

जाता है। लेखों में उपार्जन व समायोजन रोकड़ प्रवाह बजट पर प्रभाव नहीं डालेंगे। पूर्व-निर्धारित रोकड़ अन्तर्प्रवाह को प्रारम्भिक रोकड़ शेष में जोड़ा जाता है तथा सभी रोकड़ भुगतानों को इसमें से घटाया जाता है, जिससे कि रोकड़ का अन्तिम शेष प्राप्त होता है। यह विधि प्रायः व्यापारिक संगठन में प्रयोग की जाती है।

2. **समायोजित आय विधि (Adjusted Income Method)**—इस विधि में विक्रय आगम तथा आय व भुगतान (लेनदारों व देनदारों में परिवर्तन) में विलम्ब के लिए लागत आँकड़ों के समायोजन से तथा गैर-रोकड़ मदों जैसे द्वास को हटा देने से वार्षिक रोकड़ प्रवाहों की गणना की जाती है।
3. **समायोजित आर्थिक चिट्ठा विधि (Adjusted Balance Sheet Method)**—इस विधि के अन्तर्गत बजटीय आर्थिक चिट्ठा द्वारा प्रत्येक तरह की सम्पत्तियों और अल्प अवधि दायित्वों को, जैसे अपेक्षित विक्रय के प्रतिशत के रूप में पूर्वानुमानित किया जाता है। लाभ की गणना भी विक्रय के प्रतिशत की तरह की जाती है जिससे स्वामित्व समता में वृद्धि का पूर्वानुमान किया जा सके। ज्ञात समायोजनों, जो दीर्घकालीन दायित्व और आर्थिक चिट्ठा अतिरिक्त में किये जा सकते हैं, अतिरिक्त वित्त की आवश्यकता दिखाते हैं।

यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि रोकड़ प्रवाह बजट की तैयारी में पूँजी बजट का ध्यान भी दिया जाता है क्योंकि वार्षिक बजट नवीन पूँजी विनियोग की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकता है तथा किसी भी नये प्रोजेक्ट की लागत और आगम जो कि प्रवाह की ओर आयेगा, उसे अल्प अवधि बजट में सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

रोकड़ बजट, अल्प अवधि अथवा दीर्घ अवधि के लिए तैयार किया जा सकता है।

10.10.1 अल्प अवधि का रोकड़ बजट (Cash Budget for Short Period)—

महीना-दर-महीना रोकड़ बजट की तैयारी हेतु निम्नलिखित अनुमानों की आवश्यकता होती है—

(a) प्राप्तियों के सम्बन्ध में

1. देनदारों से प्राप्तियाँ,
2. रोकड़ विक्रय,
3. रोकड़ प्राप्ति के अन्य दूसरे स्रोत (जैसे, सहायक कम्पनी से प्राप्त लाभांश)।

(b) भुगतानों के सम्बन्ध में

1. क्रय के लिए भुगतान
2. खर्चों के लिए भुगतान
3. वे भुगतान जो कि सामयिक रूप से होते हैं, मासिक रूप से नहीं—
 - (i) ऋणपत्र ब्याज
 - (ii) अग्रिम में आयकर भुगतान
 - (iii) बिक्री कर इत्यादि।
4. विशेष महीनों में विशिष्ट भुगतान, उदाहरण के लिए, अंशधारकों को लाभांश, ऋणपत्रों का विमोचन, ऋण का पुनर्भुगतान, प्राप्त की गयी परिसम्पत्तियों का भुगतान इत्यादि।

रोकड़ बजट का प्रारूप (Format of Cash Budget) :

.....Co. Ltd

Cash Budget

Period.....

	Month 1	Month 2	Month 3	Month 12
प्राप्तियाँ (Receipts) :				
1. प्रारम्भिक शेष (Opening balance)				
2. देनदारों से एकत्रण (Collection from debtors)				
3. नकद विक्रय (Cash sales)				
4. बैंकों से ऋण (Loans from banks)				
5. अंश पूँजी (Share capital)				
6. विविध प्राप्तियाँ (Miscellaneous receipts)				
7. अन्य मदें (Other items)				
Total				
भुगतान (Payments) :				
1. लेनदारों को भुगतान (Payments to creditors)				
2. मजदूरी (Wages)				
3. उपरिव्यय (Overheads) :				
(a)				
(b)				
(c)				
4. ब्याज (Interest)				
5. लाभांश (Dividend)				
6. निगम कर (Corporate Tax)				
7. पूँजी व्यय (Capital expenditure)				
8. अन्य मदें (Other items)				
Total				

अन्तिम शेष (Closing balance)

(आधिक्य (+)/कमी (-)] (Surplus (+) / shortfall (-)]

विद्यार्थियों को रोकड़ बजट तैयार करने का पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। आगे उदाहरण बतायेंगे कि काल रोकड़ बजट किस प्रकार तैयार किये जा सकते हैं—

उदाहरण (Illustration) 6

अप्रैल 2017 से प्रारम्भ होने वाली छमाही के लिए निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर मासिक रोकड़ बजट तैयार कीजिए—

(i) अनुमानित मासिक विक्रय निम्नांकित है :

	₹		₹
January	1,00,000	June	80,000
February	1,20,000	July	1,00,000
March	1,40,000	August	80,000
April	80,000	September	60,000
May	60,000	October	1,00,000

(ii) अनुमानित देय मजदूरी तथा वेतन निम्नांकित है—

	₹		₹
April	9,000	July	10,000
May	8,000	August	9,000
June	10,000	September	9,000

(iii) विक्रय में से 80 प्रतिशत उधार तथा 20 प्रतिशत नकद विक्रय है। 75 प्रतिशत उधार विक्रय एक माह में वसूल हो सकेगी तथा शेष दो माह में। अशोध्य ऋण हानियाँ नहीं हैं।

(iv) क्रय राशि विक्रय की 80 प्रतिशत है तथा यह और भुगतान विक्रय वाले माह से पहले माह में होता है।

(v) फर्म के पास ₹ 1,20,000 के 10 प्रतिशत ऋणपत्र हैं जिन पर ब्याज का भुगतान तिमाही— जनवरी, अप्रैल तथा इसी प्रकार से आगे किया जाता है।

(vi) फर्म को जुलाई 2017 में ₹ 5,000 का अग्रिम कर भुगतान करना है।

(vii) फर्म के पास 1 अप्रैल, 2017 को ₹ 20,000 रोकड़ शेष है, जो कि रोकड़ शेष का न्यूनतम वांछित स्तर है। इस स्तर से किसी भी प्रकार के रोकड़ आधिक्य/कमी की पूर्ति अस्थायी विनियोग/अस्थायी विनियोग के समापन या अस्थायी ऋण को प्रत्येक माह के अन्त में लेकर की जाती है (इन पर ब्याज को छोड़कर)।

हल (Solution) :

देनदारों से संग्रह (Collection from debtors)

(Amount in ₹)

	Feb.	March	April	May	June	July	Aug.	Sept.
Total Sales	1,20,000	1,40,000	80,000	60,000	80,000	1,00,000	80,000	60,000
Credit Sales (80% of total sales)	96,000	1,12,000	64,000	48,000	64,000	80,000	64,000	48,000
Collections :								
One month		72,000	84,000	48,000	36,000	48,000	60,000	48,000
Two months			24,000	28,000	16,000	12,000	16,000	20,000
Total collections			1,08,000	76,000	52,000	60,000	76,000	68,000

Monthly Cash Budget for Six months, April to September, 2017

(Amount in ₹)

	April	May	June	July	August	Sept.
Receipts						
Opening balance	20,000	20,000	20,000	20,000	20,000	20,000
Cash sales	16,000	12,000	16,000	20,000	16,000	12,000
Collection from debtors	1,08,000	76,000	52,000	60,000	76,000	68,000
Total cash available (A)	1,44,000	1,08,000	88,000	1,00,000	1,12,000	1,00,000
Payments						
Purchases	48,000	64,000	80,000	64,000	48,000	80,000
Wages & salaries	9,000	8,000	10,000	10,000	9,000	9,000
Interest on debentures	3,000	—	—	3,000	—	—
Tax payment	—	—	—	5,000	—	—
Total payment (B)	60,000	72,000	90,000	82,000	57,000	89,000
Minimum cash balance desired	20,000	20,000	20,000	20,000	20,000	20,000
Total cash needed (C)	80,000	92,000	1,10,000	1,02,000	77,000	1,09,000

10.40

वित्तीय प्रबंधन

Surplus/deficit (A – C)	64,000	16,000	(22,000)	(2,000)	35,000	(9,000)
Investment/Financing						
Temporary Investments	(64,000)	(16,000)	—	—	(35,000)	—
Liquidation of temporary Investments or temporary borrowings	—	—	22,000	2,000	—	9,000
Total effect of investment/ financing (D)	(64,000)	(16,000)	22,000	2,000	(35,000)	9,000
Closing cash balance (A + D – B)	20,000	20,000	20,000	20,000	20,000	20,000

उदाहरण (Illustration) 7

एक विभागीय भण्डार से सम्बन्धित निम्नांकित सूचनाओं से आप 31 मार्च, 2019 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए तैयार कीजिए—

- (a) प्राप्ति एवं भुगतान के आधार पर माह के अनुसार रोकड़ बजट,
 (b) तीन माह के लिए कोषों के स्रोत एवं उपयोग का विवरण।

यह आशा की जाती है कि 1 जनवरी, 2019 को कार्यशील पूँजी निम्नांकित होगी—

	₹ '000
हाथ में एवं बैंक में रोकड़ (Cash in hand at bank)	545
अल्पकालीन विनियोग (Short-term investments)	300
देनदार (Debtors)	2,570
स्टॉक (Stock)	1,300
व्यापारिक लेनदार (Trade creditors)	2,110
अन्य लेनदार (Other creditors)	200
देय लाभांश (Dividends payable)	485
देय कर (Tax due)	320
संयन्त्र (Plant)	800

बजट्टेड लाभ विवरण (Budgeted Profit Statement) :

₹ '000

	January	February	March
विक्रय (Sales)	2,100	1,800	1,700
विक्रय की लागत (Cost of sales)	1,635	1,405	1,330
सकल लाभ (Gross Profit)	465	395	370

प्रशासनिक विक्रय एवं वितरण व्यय (Administrative, Selling and Distribution Expenses)	315	270	255
कर से पूर्व शुद्ध लाभ (Net Profit before tax)	150	125	115

प्रत्येक माह के अन्त में बजटेड शेष (Budgeted balances at the end of each month) :

₹ '000

	31st Jan	28st Feb	31st March
अल्पकालीन विनियोग (Short-term investments)	700	—	200
देनदार (Debtors)	2,600	2,500	2,350
स्टॉक (Stock)	1,200	1,100	1,000
व्यापारिक लेनदार (Trade creditors)	2,000	1,950	1,900
अन्य लेनदार (Other creditors)	200	200	200
देय लाभांश (Dividends payable)	485	—	—
देय कर (Tax due)	320	320	320
संयन्त्र [Plant (depreciation ignored)]	800	1,600	1,550

प्रत्येक माह के बजटिंग व्ययों में ह्रास की राशि ₹60,000 को सम्मिलित किया गया है।

हल (Solution)

Working :

			₹ '000
(1) Payments to creditors :	Jan. 2019	Feb. 2019	Mar. 2019
Cost of sales	1,635	1,405	1,330
Add : Closing Stocks	1,200	1,100	1,000
	2,835	2,505	2,330
Less : Opening Stocks	1,300	1,200	1,100
Purchases	1,535	1,305	1,230
Add : Trade Creditors, Opening balance	2,110	2,000	1,950
	3,645	3,305	3,180
Less : Trade Creditors, closing balance	2,000	1,950	1,900
Payment	1,645	1,355	1,280

(2) Receipts from debtors :			
Debtors, opening balances	2,570	2,600	2,500
Add : Sales	2,100	1,800	1,700
	4,670	4,400	4,200
Less : Debtors, closing balance	2,600	2,500	2,350
Receipt	2,070	1,900	1,850

रोकड़ बजट (Cash Budget)

(a) For 3 months ending 31st March, 2019

	₹ '000		
	Jan. 2019	Feb. 2019	Mar. 2019
प्रारम्भिक रोकड़ शेष	545	315	65
जोड़ो : प्राप्तियाँ			
देनदारों से वसूली	2,070	1,900	1,850
निवेश विक्रय	—	700	—
प्लान्ट विक्रय	—	—	50
कुल (A)	2,615	2,915	1,965
घटाओ : भुगतान			
लेनदारों को भुगतान	1,645	1,355	1,280
व्यय	255	210	195
पूँजीगत व्यय	—	800	—
लाभांश का भुगतान	—	485	—
निवेश का क्रय	400	—	200
कुल भुगतान (B)	2,300	2,850	1,675
रोकड़ अन्तिम शेष			
(A-B)	315	65	290

(b) कोषों के स्रोत तथा कोषों के उपयोग का त्रैमासिक विवरण 31 मार्च, 2019 को (Statement of Sources and Uses of Funds for the three months' period ending 31st March, 2019)

	₹ 000	₹ ' 000
साधन :		
परिचालन से कोष		
शुद्ध लाभ (150 + 125 + 115)	390	
जोड़ो : द्वास (60 × 3)	180	570
प्लान्ट का विक्रय		50
		620
कार्यशील पूँजी में कमी		665
Total		1,285
उपयोग		
प्लान्ट का क्रय		800
लाभांश का भुगतान		485
Total		1,285

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन का विवरण
(Statement of Changes in Working Capital)

	Jan. 2019 ₹ '000	March 2019 ₹ '000	Increase ₹ '000	Decrease ₹ '000
चालू सम्पत्तियाँ				
रोकड़ एवं बैंक शेष	545	290		255
अल्पकालीन निवेश	300	200		100
देनदार	2,570	2,350		220
रहतिया	1,300	1,000		300
	4,715	3,840		
चालू दायित्व				
व्यापारिक लेनदार	2,110	1,900	210	—
अन्य लेनदार	200	200	—	—
देय कर	320	320	—	—
	2,630	2,420		
कार्यशील पूँजी में कमी	2,085	1,420		
		665	665	
	2,085	2,085	875	875

10.10.2 दीर्घ अवधि के लिए रोकड़ बजट (Cash Budget for Long Period)

दीर्घकालीन रोकड़ पूर्वानुमान प्रक्षेपित स्रोत तथा कोषों के उपयोग का विवरण है। दीर्घकालीन रोकड़ पूर्वानुमान ज्ञात करने के लिए निम्न प्रक्रिया का प्रयोग किया जा सकता है—

- (i) वर्ष के आरम्भ में बैंक में रोकड़ को लीजिए (Take the cash at bank in the beginning of the year) :
- (ii) जोड़िए (Add) :
 - (a) अर्जन के लिए अपेक्षित व्यापारिक लाभ (कर से पहले) (Trading profit (before tax) expected to be earned) :
 - (b) अपलिखित किये जाने वाले ह्रास तथा अन्य विकास व्यय (Depreciation and other development expenses incurred to be written off);
 - (c) सम्पत्ति की बिक्री से प्राप्त राशि (Sale proceeds of assets);
 - (d) अंशों व ऋणपत्रों के नवीन निर्गमन से प्राप्त राशि (Proceeds of fresh issue of shares or debentures and);
 - (e) कार्यशील पूँजी में कमी अर्थात् चालू सम्पत्ति (सिवाय रोकड़ के) घटाया चालू दायित्व (Reduction in working capital that is current assets (except cash)/less current liabilities)।
- (iii) घटाइए (Deduct) :
 - (a) देय लाभांश (Dividends to be paid)
 - (b) खरीदी जाने वाली सम्पत्तियों की लागत (Cost of assets to be purchased)
 - (c) देय कर (Taxes to be paid)
 - (d) शोधन किये जाने वाले ऋणपत्र या अंश (Debentures or shares to be redeemed)।
 - (e) कार्यशील पूँजी में वृद्धि (Increase in working capital)

उदाहरण (Illustration) 8

आपको नीचे एक कम्पनी के दो वर्षों का लाभ-हानि खाता दिया गया है—

लाभ-हानि खाता (Profit & Loss Account)

	Year 1 ₹	Year 2 ₹		Year 1 ₹	Year 2 ₹
To Opening stock	80,00,000	1,00,00,000	By Sales	8,00,00,000	10,00,00,000
To Raw materials	3,00,00,000	4,00,00,000	By Closing		
To Stores	1,00,00,000	1,20,00,000	Stock	1,00,00,000	1,50,00,000
To Manufacturing Expense	1,00,00,000	1,60,00,000	By Misc. Income	10,00,000	10,00,000
To Other Expenses	1,00,00,000	1,00,00,000			
To Depreciation	1,00,00,000	1,00,00,000			
To Net Profit	1,30,00,000	1,80,00,000			
	9,10,00,000	11,60,00,000		9,10,00,000	11,60,00,000

तृतीय वर्ष में ₹ 12,00,00,000 के विक्रय की सम्भावना है।

परिणामस्वरूप प्रभाओं के साथ अन्य व्ययों में ₹ 50,00,000 की वृद्धि होगी। स्टॉक में केवल कच्ची सामग्री है। मान लें कि विक्रय तथा क्रय नकद होता है तथा अन्तिम रहतिये में वर्ष एक तथा वर्ष दो के मध्य समान राशि से वृद्धि होने की सम्भावना है। आप मान सकते हैं कि लाभांश का कोई भुगतान नहीं किया गया है। कम्पनी ऋण सुविधा के लिए उपलब्ध रोकड़ का 75 प्रतिशत प्रयोग कर सकती है। तृतीय वर्ष में एक उद्देश्य के लिए संचालन से कितनी रोकड़ उपलब्ध होगी? आयकर को छोड़ दें।

हल (Solution)

तीसरे वर्ष के लिए प्रक्षेपित लाभ-हानि खाता (Projected Profit & Loss Account for the Year 3)

	Year 2 Actual (₹ in lakh)	Year 3 Projected (₹ in lakh)		Year 2 Actual (₹ in lakh)	Year 3 Projected (₹ in lakh)
To Materials consumed	350	420	By Sales	1,000	1,200
To Stores	120	144	By Misc.		
To Mfg. Expenses	160	192	Income	10	10
To Other expenses	100	150			
To Depreciation	100	100			
To Net profit	180	204			
	1,010	1,210		1,010	1,210

Cash Flow :

	(₹ in lakh)
Profit	204
Add : Depreciation	<u>100</u>
	304
Less : Cash required for increase in stock	<u>50</u>
Net cash inflow	<u>254</u>

Available for servicing the loan : 75% of ₹ 2,54,00,000 = 1,90,50,000.

Working Notes :

(i) Material Consumed in year 2 : 35% of sales

(ii) Likely consumption in year 3 : ₹ 1,200 × $\frac{35}{100}$ = ₹ 420 (Lakh)

(iii) Store are 12% of sales, as in year 2.

(iv) Manufacturing expenses are 16% of sales

नोट : उपर्युक्त यह भी दर्शाता है कि एक प्रक्षेपित लाभ-हानि खाता किस प्रकार तैयार किया जाता है?

10.10.3 रोकड़ वसूली व भुगतान का प्रबंधन (Managing Cash Collection and Disbursements)

रोकड़ बजट तैयार करने के पश्चात वित्तीय प्रबंधक को इस बात से आश्वस्त हो जाना चाहिए कि अनुमानित रोकड़ प्रवाह व वास्तविक रोकड़ प्रवाह में कोई महत्वपूर्ण अन्तर तो उपस्थित नहीं है।

रोकड़ प्रबंध की इस कुशलता को प्राप्त करने के लिए रोकड़ भुगतान व वसूली पर उचित नियन्त्रण को ठीक करना होगा।

रोकड़ प्रवाह के प्रबंध में दो उद्देश्य होने चाहिए—

- जितना सम्भव हो रोकड़ वसूली को त्वरित करना चाहिए
- रोकड़ भुगतान में देरी करनी चाहिए

अब इन दोनों उद्देश्यों की अलग-अलग विवेचना की जायेगी।

10.10.4 रोकड़ वसूली को तीव्र करना (Accelerating Cash Collections)—एक फर्म रोकड़ सुरक्षित रख सकती है और अपनी नकद शेष की आवश्यकता को कम कर सकती है यदि वह अपनी रोकड़ वसूली को शीघ्रता से बीजक निर्गमित करके या रोकड़ वसूली के अन्य आवश्यक कदम उठाकर तेज गति दे। यह ग्राहकों के बिल भुगतान व चेक की वसूली के बीच के समय अन्तराल को कम करके त्वरित किये जा सकते हैं जिससे फर्म के प्रयोग के लिए कोष उपलब्ध होंगे।

फर्म रोकड़ वसूली की गति को तेज करने व परिवर्तनशील समय में कमी करने के लिए वसूली प्रणाली का विकेन्द्रीकरण, जिसे केन्द्रीकृत संघनन बैंकिंग व लॉक-बॉक्स व्यवस्था के नाम से जाना जाता है, के द्वारा कर सकती है।

(i) **संघनन बैंकिंग (Concentration Banking)**—संघनन बैंकिंग में कम्पनी प्रधान कार्यालय में एक संग्रहण केन्द्र बनाने की अपेक्षा विभिन्न क्षेत्रों में अनेक रणनीतिक संग्रहण केन्द्र स्थापित करती है। इस व्यवस्था से वह समय कम हो जाता है जिसके दौरान ग्राहक अपनी प्राप्तियों को डाक द्वारा भेजता है व जब वे कम्पनी के पास खर्च करने योग्य कोष बन जाते हैं। विभिन्न संग्रहण केन्द्रों के द्वारा प्राप्त भुगतानों को उनके सन्दर्भित स्थानीय बैंकों के पास जमा करा दिया जाता है जो कि सभी अधिशेष कोषों को प्रधान कार्यालय के संघनन बैंक को हस्तान्तरित कर देते हैं। संघनन बैंक जिसके पास कम्पनी के मुख्य खाते हैं, सामान्यतः मुख्यालयों में स्थित होता है। संघनन बैंकिंग परिवर्तनशीलता के आकार को कम करने का एक महत्वपूर्ण व लोकप्रिय तरीका है।

(ii) **लॉक-बॉक्स व्यवस्था (Lock-Box System)**—कोषों के प्रवाह को तीव्र करने का अन्य तरीका लॉक-बॉक्स व्यवस्था है। संघनन बैंकिंग के साथ, किसी संग्रहण केन्द्र द्वारा प्राप्तियाँ/भुगतान प्राप्त होते हैं तथा प्रक्रिया के बाद बैंक में जमा करा दिए जाते हैं। लॉक-बॉक्स व्यवस्था का उद्देश्य कम्पनी द्वारा भुगतानों की प्राप्ति व बैंक में जमा के मध्य लिए गए समय की समाप्ति करना है। लॉक-बॉक्स व्यवस्था प्रायः क्षेत्रीय आधार वाली व्यवस्था है जिसे कम्पनी बिलिंग प्रणाली के अनुसार चुनती है।

इस व्यवस्था के अन्तर्गत, कम्पनी स्थानीय डाक कार्यालय से बॉक्स को किराये पर ले लेती है और प्रत्येक स्थान पर स्थित अपने बैंक को इन बॉक्सों में जमा भुगतान को उठाने के लिए अधिकृत करती है। ग्राहकों को बिल के स्थान पर इन लॉक-बॉक्सों में अपने जमा भुगतान को डाक द्वारा भेजने के निर्देश

देते हैं। बैंक दिन में कई बार डाक उठाते हैं और कम्पनी के खातों में चेकों को जमा करते हैं। चेकों को अभिलेख (Record) करने के उद्देश्य से उन्हें अति लघु रूप में फिल्मांकित किया जाता है और संग्रह के लिए दुरुस्त (clear) किया जाता है। कम्पनी लिफाफे में जमा पर्ची और सभी भुगतानों की एक सूची अन्य सामग्री के साथ प्राप्त करती है। इस प्रक्रिया में जमा पर्ची और सभी भुगतानों की एक सूची अन्य सामग्री के साथ प्राप्त करती है। इस प्रक्रिया से कम्पनी चेकों को सँभालने व जमा कराने के कार्य से मुक्त हो जाती है।

लॉक-बॉक्स व्यवस्था का मुख्य लाभ यह है कि चैक शीघ्र ही बैंकों के पास जमा कर दिये जाते हैं व शीघ्र ही संगृहीत कोष बन जाते हैं यदि वह जमा से पहले कम्पनी द्वारा प्रक्रियागत होते तो अधिक समय लगता। दूसरे शब्दों में, वह समय अन्तराल (Time Lag), जिसके दौरान कम्पनी द्वारा चैक प्राप्त होते हैं व जब वे बैंक में वास्तव में जमा कराये जाते हैं, समाप्त हो जाता है।

लॉक-बॉक्स व्यवस्था की मुख्य कमी है इसके परिचालन की लागत। चेकों के लेन-देन क्लीयरिंग के अलावा भी बैंक अनेक सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा इसके बदले में क्षतिपूर्ति की माँग करते हैं। चूँकि लागत लगभग जमा किये गए चेकों की संख्या के समानुपाती होती है, लॉक-बॉक्स व्यवस्था प्रायः लाभप्रद नहीं होती यदि औसत जमा भुगतान (कम) है। लॉक-बॉक्स व्यवस्था को प्रयोग किया जाये अथवा नहीं, यह निर्धारित करने का सही नियम, या इसकी जगह संघनन बैंकिंग शुरू की जाए, साधारण रूप से विमोचित होने वाले कोषों से उत्पन्न सीमान्त आय के साथ सर्वाधिक कार्यकुशल व्यवस्था के अतिरिक्त लागतों की तुलना करने से हो सकता है। यदि आय की तुलना में लागतें कम हैं, व्यवस्था लाभप्रद है, यदि नहीं तो यह एक लाभदायक व्यवस्था नहीं है।

रोकड़ प्रबन्ध के सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के फ्लोट (Different Kinds of Float with reference to Management of Cash)—फ्लोट शब्द का अभिप्राय उस समय अवधि से है जो कि रोकड़ को प्रभावित करता है जो कि संग्रहण प्रक्रिया के विभिन्न चरणों से गुजरता है। रोकड़ प्रबन्ध के सन्दर्भ में चार तरह के फ्लोट हैं—

- **बिलिंग फ्लोट (Billing Float)**—बीजक एक औपचारिक प्रलेख है जो कि विक्रेता तैयार करता है और बेचे गये सामान के लिए या प्रदान की जाने वाली सेवाओं के लिए भुगतान प्रार्थना के रूप में क्रेता को भेजता है। विक्रय और बीजक द्वारा भेजने के मध्य लगा समय बिलिंग फ्लोट कहलाता है।
- **डाक फ्लोट (Mail Float)**—यह वह समय है जब कोई चैक डाकघर द्वारा संदेशवाहन सेवा या वितरण के अन्य साधनों के माध्यम से प्रक्रियत होता है।
- **चैक प्रक्रियन फ्लोट (Cheque Processing Float)**—यह कम्पनी द्वारा चैक के प्राप्त होने के बाद विक्रेता द्वारा चैक को छाँटने, अभिलेखन व जमा कराने में लिया गया समय है।
- **बैंकिंग प्रक्रियन फ्लोट (Banking Processing Float)**—यह चैक जमा करने से लेकर विक्रेताओं के लेखों में कोषों को क्रेडिट करने तक का समय है।

10.10.5 भुगतानों का नियन्त्रण (Controlling Payment)—भुगतानों पर प्रभावी नियन्त्रण रोकड़ के आवर्त को तीव्र कर सकता है। यह केवल तभी सम्भव है जब भुगतान देय तिथि पर किया जाये तथा चेकों के स्थान पर ड्राफ्ट (विनिमय विपत्रों) का प्रयोग अधिक किया जाये।

रोकड़ की उपलब्धता को फ्लोट खोलकर अधिकतम किया जा सकता है। इससे फर्म शुद्धता के साथ समय का अनुमान करती है कि निर्गमित चेक भुगतान के लिए कब प्रस्तुत किया जायेगा और इस प्रकार अधिक चेकों का निर्गमन करके फ्लोट अवधि को अपने लाभ के लिए प्रयोग करती है, लेकिन बैंक खाते में उतना ही रोकड़ शेष रखती है जो उन चेकों के भुगतान के लिए पर्याप्त है, जो एक विशिष्ट तिथि पर भुगतान हेतु प्रस्तुत करने के लिए सम्भावित है।

कम्पनी अपने बाहरी आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान चेक द्वारा कर सकती है और इसे डाक द्वारा भेज सकती है। रास्ते की देरी और चेक एकत्रण में लगने वाले समय को फ्लोट बढ़ाने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) 9

प्राची लिमिटेड एक विनिर्माण कम्पनी है जो थोक ग्राहकों को बेचने के लिए सफाई-उत्पादों का उत्पादन करती है। इसके तीन आपूर्तिकर्ता और दो ग्राहक हैं। प्राची लिमिटेड, अपनी नकदी का प्रबंध करने के लिए समाशोधित कोष पूर्वानुमान पर विश्वास करती है।

आप कम्पनी में लेखा तकनीशियन हैं और आपको सोमवार, 7 अगस्त से शुक्रवार, 11 अगस्त, 2019 की अवधि के लिए (7 और 11 अगस्त को शामिल करते हुए) समाशोधित कोष पूर्वानुमान तैयार करना है। आपको निम्नानुसार सूचनाएँ दी गई हैं :

(1) ग्राहकों से प्राप्ति :

ग्राहकों का नाम	उधार अवधि	भुगतान विधि	7 अगस्त 2019 बिक्री	7 जुलाई 2019 बिक्री
W लि.	1 कैलेण्डर महीना	BACS	₹ 1,50,000	₹ 1,30,000
X लि.	कोई नहीं	चेक	₹ 1,80,000	₹ 1,60,000

(a) BACS (Bankers Automated Clearing Services) द्वारा धन की प्राप्ति तात्कालिक है।

(b) X लि. के चेक प्राची लि. के खाते में बिक्री के दिन ही जमा कर दिए जाते हैं और भुगतान के दिन के तीसरे दिन इस चैक धनराशि खाते में आ जाती है (भुगतान के दिन को छोड़कर)।

(2) पूर्तिकर्ताओं को भुगतान :

पूर्तिकर्ता का नाम	उधार अवधि	भुगतान विधि	7 अगस्त 2019	7 जुलाई 2019	7 जून 2019
A लि.	1 कैलेण्डर महीना	स्थायी आदेश	₹ 65,000	₹ 55,000	₹ 45,000
B लि.	2 कैलेण्डर महीना	चेक	₹ 85,000	₹ 80,000	₹ 75,000
C लि.	कोई नहीं	चेक	₹ 95,000	₹ 90,000	₹ 85,000

- (a) प्राची लि. ने A लि. से पूर्तियों के लिए ₹ 45,000 मासिक के भुगतान के स्थायी आदेश की स्थापना की है। यह 7 अगस्त को प्राची के बैंक खाते से चला जाता है। प्रत्येक कुछ महीनों में आपूर्ति की वास्तविक लागत को प्रतिबिंबित करने के लिए समयोजन किया जाता है। (आपको यह समयोजन करने की आवश्यकता नहीं है।)
- (b) प्राची लि. 7 अगस्त B लि. और C लि. को डाक द्वारा चेक भेजेगी। धनराशि बैंक खाते से इसके दूसरे दिन चली जाएगी (डाक के दिन को छोड़कर)।

(3) मजदूरी और वेतन :

	जुलाई 2019	अगस्त 2019
साप्ताहिक मजदूरी	₹ 12,000	₹ 13,000
मासिक वेतन	₹ 56,000	₹ 59,000

- (a) फैक्टरी मजदूरों को साप्ताहिक मजदूरी का भुगतान किया जाता है। उन्हें 11 अगस्त को एक सप्ताह की मजदूरी दी जाएगी, दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में कार्य के लिए (अर्थात् वे एक सप्ताह हस्तगत काम करते हैं)।
- (b) सभी ऑफिस कर्मचारियों को मासिक वेतन BACS द्वारा दिया जाता है। दिसम्बर का वेतन 7 अगस्त को दिया जाएगा।

(4) अन्य विविध भुगतान :

- (a) प्रत्येक सोमवार की सुबह, खुदरा नकदी के लिए, खुदरा रोकड़िया ₹ 200 बैंक से निकालता है। धनराशि सीधे, प्राची के बैंक खाते से निकल जाती है।
- (b) कमरे की सफाई करने वाले को, खुदरा रोकड़ से प्रत्येक बुधवार की सुबह ₹ 30 का भुगतान किया जाता है।
- (c) मंगलवार 8 अगस्त को ₹ 300 मूल्य की कार्यालय स्टेशनरी का आदेश दिया जाएगा। इसे कम्पनी के डेबिट कार्य द्वारा भुगतान किया जाएगा। इस तरह के भुगतान, सामान्यतः कम्पनी के खाते में से अगले कार्य दिवस पर निकलते हैं।
- (d) 10 अगस्त को इंटरनेट पर, पाँच नए सॉफ्टवेयर का आदेश दिया जाएगा, जिनकी कुल लागत ₹ 6,500 है। चेक उसी दिन भेजा जाएगा। यह धनराशि प्राची के बैंक खाते से चेक भेजने के दिन से दूसरे दिन निकलेगी (चेक भेजने की तिथि को छोड़कर)।

- (5) अन्य सूचना :** 7 जनवरी, 2019 को प्राची लि. के बैंक खाते का शेष ₹ 2,00,000 होगा। यह शेष, पुस्तक शेष तथा समाशोधित शेष दोनों का प्रतिनिधित्व करता है।

आवश्यक : सोमवार 7 अगस्त से शुक्रवार 11 अगस्त 2019 (दोनों तिथियों को शामिल करते हुए) समाशोधित कोष पूर्वानुमान तैयार कीजिए। प्रत्येक दिन के लिए असमाशोधित राशि फ्लोट को स्पष्ट रूप से दर्शाएं।

हल (Solution)

समाशोधित कोष पूर्वानुमान (Cleared Funds Forecast)

	7 अगस्त 2019 (सोमवार) ₹	8 अगस्त 2019 (मंगलवार) ₹	9 अगस्त 2019 (बुधवार) ₹	10 अगस्त 2019 (बृहस्पतिवार) ₹	11 अगस्त 2019 (शुक्रवार) ₹
प्राप्तियाँ					
W लि.	1,30,000	0	0	0	0
X लि.	0	0	0	1,80,000	0
(a)	<u>1,30,000</u>	<u>0</u>	<u>0</u>	<u>1,80,000</u>	<u>0</u>
भुगतान					
A लि.	45,000	0	0	0	0
B लि.	0	0	75,000	0	0
C लि.	0	0	95,000	0	0
मजदूरी	0	0	0	0	12,000
वेतन	56,000	0	0	0	0
खुदरा रोकड़	200	0	0	0	0
स्टेशनरी	0	0	300	0	0
(b)	<u>1,01,200</u>	<u>0</u>	<u>1,70,300</u>	<u>0</u>	<u>12,000</u>
भुगतान पर प्राप्तियाँ का आधिक्य (a) – (b)	28,800	0	(1,70,300)	1,80,000	(12,000)
समाशोधित शेष b/f	2,00,000	2,28,800	2,28,800	1,58,500	2,38,500
समाशोधित शेष	<u>2,28,800</u>	<u>2,28,800</u>	<u>58,500</u>	<u>2,38,500</u>	<u>2,26,500</u>
c/f (c)					
असमाशोधित कोष फ्लोट					
प्राप्तियाँ	1,80,000	1,80,000	1,80,000	0	0
भुगतान	(1,70,000)	(1,70,300)	0	(6,500)	(6,500)
(d)	<u>10,000</u>	<u>9,700</u>	<u>1,80,000</u>	<u>(6,500)</u>	<u>(6,500)</u>
कुल पुस्तक शेष c/f	2,38,800	2,38,500	2,38,500	2,32,000	2,20,000
(c + d)	2,38,800	2,38,500	2,38,500	2,32,000	2,20,000

10.10.6 अनुकूलतम रोकड़ शेष का निर्धारण (Determining the Optimum Cash Balance)— दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए फर्म को अनुकूलतम रोकड़ शेष को बनाना चाहिए। इसे अतिरिक्त रोकड़ को संकट से बचने के लिए या सुरक्षा स्टॉक की तरह रखना चाहिए। रोकड़ शेष की राशि व्यापार में जोखिम प्रत्याय को दूर रखने के ऊपर निर्भर करेगी। फर्म को अनुकूलतम—उचित रूप से पर्याप्त, न अधिक और न ही बहुत कम रोकड़ शेष धारण करना चाहिए। तथापि यह एक प्रश्न उत्पन्न करता है कि अनुकूलतम रोकड़ शेष कैसे निर्धारित किया जाये, यदि रोकड़ प्रवाह अनुमान करना सम्भव है तथा यदि अनुमान सम्भव नहीं है।

10.11 रोकड़ प्रबन्धन मॉडल (Cash Management Models)

हाल ही के वर्षों में कई तरह के गणितीय मॉडल विकसित किए गये हैं जो कि व्यावसायिक संगठनों द्वारा रखे जाने वाले अनुकूलतम रोकड़ शेष का निर्धारण करने में मदद करते हैं।

इन सभी मॉडलों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि रोकड़ अनावश्यक रूप से व्यर्थ (Idle) न रह सके और उसी के साथ फर्म को रोकड़ कमी (shortage) की स्थिति का सामना न करना पड़े। ये सभी मॉडल दो श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं—

- रहतिया प्रकार के मॉडल
- स्टॉकैस्टिक (stochastic) मॉडल।

रहतिया प्रकार के मॉडलों को फर्म के पास अनुकूलतम रोकड़ शेष को ज्ञात करने में वित्त प्रबन्धक की सहायता करने हेतु निर्मित किया जाता है। विलियम जे बौमोल का “आर्थिक आदेश मात्रा” मॉडल रोकड़ प्रबन्धन समस्याओं पर समान रूप से लागू होता है, जब दशाएँ निश्चित हों या जहाँ रोकड़ प्रवाह का अनुमान सम्भव हो।

फिर भी, उस स्थिति में जहाँ आर्थिक आदेश मात्रा मॉडल लागू नहीं होता, रोकड़ के अनुकूलतम शेष को निर्धारित करने के लिए रोकड़ प्रबन्ध का “स्टॉकैस्टिक” मॉडल प्रयुक्त होता है। यह तब घटित होता है जब रोकड़ की माँग “स्टॉकैस्टिक” है और अग्रिम रूप से ज्ञान नहीं है।

10.11.1 विलियम जे. बौमोल का आर्थिक आदेश मात्रा मॉडल—1952 (William J. Baumol's Economic Order Quantity Model-1952)

इस मॉडल के अनुसार अनुकूलतम रोकड़ स्तर वह स्तर है जहाँ रोकड़ को रखने की लागतें व लेन—देन की लागतें न्यूनतम हों।

आगे ले जाने की लागतों (Carrying Costs) से अभिप्राय रोकड़ को रखने की लागतें; जैसे—विपणन योग्य प्रतिभूतियों पर परित्याग करने योग्य ब्याज। लेन—देन लागतों से अभिप्राय है—विपणन योग्य प्रतिभूतियों को रोकड़ में बदलने की लागतें। यह तब होता है जब फर्म के पास रोकड़ की कमी हो जाती है और उसे प्रतिभूतियाँ बेचनी पड़ती हैं जिसके परिणामस्वरूप लिपिकीय, दलाली, पंजीकरण व अन्य लागतें आती हैं।

इस मॉडल के अनुसार, अनुकूलतम रोकड़ शेष वह बिन्दु होगा जिस पर ये दोनों लागतें समान हैं। अनुकूलतम रोकड़ शेष को ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र है—

$$C = \sqrt{\frac{2U \times P}{S}}$$

जहाँ,

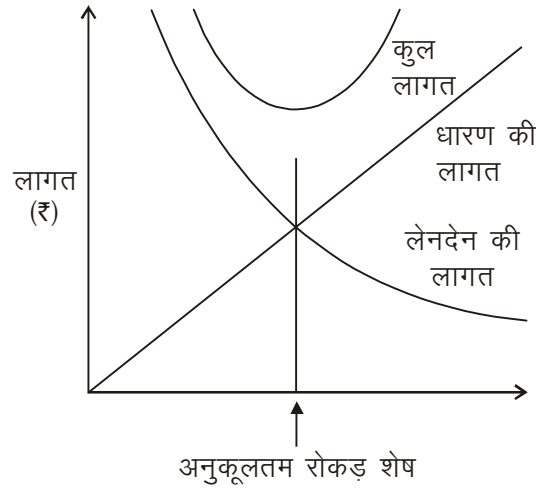
C = अनुकूलतम रोकड़ शेष

U = वार्षिक/मासिक रोकड़ वितरण

P = प्रति लेन-देन स्थायी लागत

S = एक ₹ की अवसर लागत, प्रतिवर्ष (अथवा प्रतिमाह)

इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा समझा जा सकता है—



यह मॉडल निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है—

- फर्म की रोकड़ जरूरतों को निश्चित रूप से जाना जा सकता है।
- एक समयावधि में रोकड़ का प्रयोग समान रूप से किया जाता है और इसे भी निश्चितता के साथ जाना जा सकता है।
- रोकड़ को धारण करने की लागत को निश्चितता के साथ जाना जा सकता है।
- लेन-देन की लागत स्थिर रहती है।

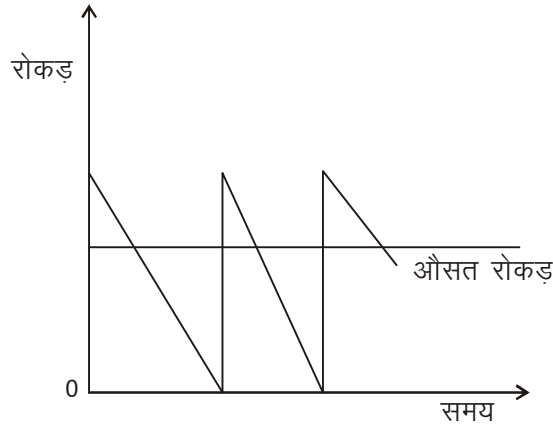
उदाहरण (Illustration) 10

एक फर्म रोकड़ वितरण के लिए एक पृथक खाता रखती है। कुल वितरण ₹ 1,05,000 प्रति माह अर्थात् ₹ 12,60,000 प्रति वर्ष है। रोकड़ को वितरण खाते में हस्तान्तरण करने की प्रशासनिक एवं व्यवहार लागत ₹ 20 प्रति हस्तान्तरण है। विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ 8% प्रति वर्ष अर्जित करती हैं।

विलियम जे बौमोल मॉडल के अनुसार अनुकूलतम रोकड़ शेष का निर्धारण कीजिए।

हल (Solution)

$$C = \sqrt{\frac{2 \times ₹ 12,60,000 \times ₹ 20}{0.08}} = ₹ 25,100$$



बौमोल मॉडल की सीमा यह है कि यह रोकड़ प्रवाह में उच्चावचन की स्वीकृति नहीं देता। व्यवहार में फर्म अपने रोकड़ शीर्ष को एकरूपता से प्रयोग नहीं करती और न ही वे दैनिक रोकड़ अन्तर्प्रवाह एवं बाह्य प्रवाह का अनुमान लगाने में समर्थ होती है। मिलर-ऑर (MO) मॉडल इसी कमी को दूर करता है और दैनिक रोकड़ प्रवाह में परिवर्तन की अनुमति देता है।

10.11.2 मिलर-ऑर रोकड़ प्रबन्ध मॉडल (Miller-Orr Cash Management Model)—1966

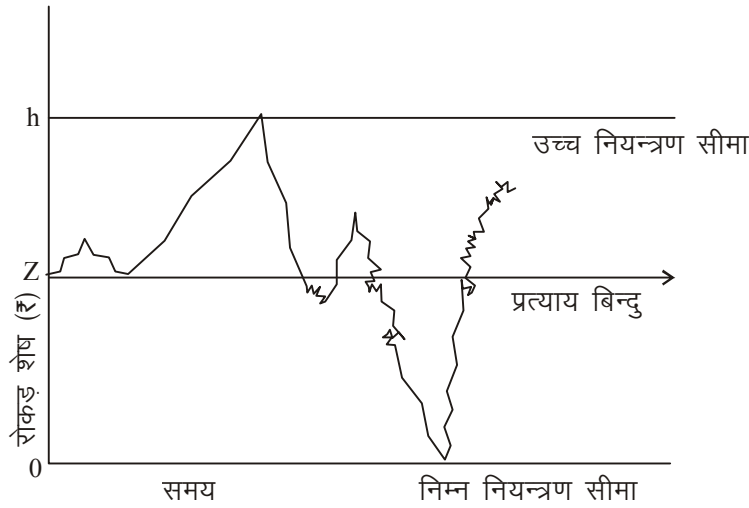
इस मॉडल के अनुसार शुद्ध रोकड़ प्रवाह पूर्णतः “स्टॉकैस्टिक” है।

जब रोकड़ शेष में यादृच्छिक परिवर्तन होते हैं तो नियन्त्रण सिद्धान्त के प्रयोग से उपयोगी उद्देश्य पूरे होते हैं। मिलर-ऑर मॉडल इसी प्रकार के नियन्त्रण-सीमा मॉडलों में से एक है।

यह मॉडल किसी विनियोजित खाते व रोकड़ खाते के मध्य हस्तांतरणों के समय और आकार का निर्धारण करने के लिए तैयार किया गया है। इस मॉडल में रोकड़ कोषों के लिए नियन्त्रण सीमाएँ निश्चित की जाती हैं। इस नियन्त्रण सीमा में ‘h’ उच्चतर नियन्त्रण सीमा, z प्रतिफल बिन्दु (Return Point), शून्य (Zero) निम्न सीमा है।

- जब रोकड़ शेष उच्चतर नियन्त्रण सीमा तक पहुँच जाता है, तब रोकड़ की (h-z) राशि को विपणन योग्य प्रतिभूतियों में परिवर्तित कर दिया जाता है।
- जब यह निम्नतर सीमा पर पहुँचता है, तब विपणन योग्य प्रतिभूति खाते से रोकड़ खाते में हस्तांतरण किया जाता है।
- उस समय के दौरान जब रोकड़ शेष (h, z) व (z, 0) के मध्य स्थित होता है, अर्थात् उच्चतम व निम्नतम सीमाओं के भीतर, तब रोकड़ व विपणन योग्य प्रतिभूति खातों के मध्य कोई लेन-देन नहीं किया जाता है।

रोकड़ शेष की उच्चतम व निम्नतम सीमाएँ प्रतिभूति लेन-देनों के साथ सम्बन्धित स्थायी लागतों, रोकड़ रखने की अवसर लागत तथा रोकड़ शेषों में सम्भावित उच्चावचन सीमा के आधार पर निर्धारित की जाती हैं। ये सीमाएँ न्यूनतम सम्भव कुल लागतों पर रोकड़ की माँग को सन्तुष्ट करती हैं। अग्रांकित चित्र मिलर-ऑर मॉडल को उद्धरित करता है—



MO मॉडल अधिक वास्तविक है क्योंकि यह निचली और ऊँची सीमाओं के मध्य रोकड़ शेष में परिवर्तन अनुमत्य करता है। वित्त प्रबन्धक फर्म की तरलता आवश्यकताओं के अनुसार सीमाओं को तय कर सकता है अर्थात् न्यूनतम एवं अधिकतम रोकड़ शेष को बनाये रखना।

10.12 रोकड़ प्रबन्ध में विकास (Recent Development in Cash Management)

रोकड़ प्रबन्ध के क्षेत्र में नवीनतम विकासों को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बहुत प्रभाव डालता है कि हम अपने रोकड़ का प्रबन्ध कैसे करें?

तकनीकी प्रगति और परिचालन लागत में कमी की इच्छा दोनों ने रोकड़ प्रबन्ध में कुछ नवोन्मेषी तकनीकों को जन्म दिया है। इनमें से कुछ निम्न हैं—

10.12.1 इलेक्ट्रॉनिक कोष हस्तांतरण (Electronic Fund Transfer)—सूचना प्रौद्योगिकी में स्थान रखने वाले विकास के साथ वर्तमान समय की बैंकिंग प्रणाली अपने ग्राहकों को प्रभावी बैंकिंग सेवाओं के प्रस्ताव व रोकड़ प्रबन्ध सेवाओं के लिए बैंक शाखाओं को कम्प्यूटरीकरण कर परिवर्तित कर रही है। नेटवर्क विभिन्न बैंक शाखाओं को आपस में जोड़ेगा। यह ग्राहकों को निम्नलिखित तरीके से सहायता करेगा—

- लेखों का शीघ्र अद्यतनीकरण (updatation)
- कोषों का शीघ्र हस्तान्तरण,
- विदेशी विनिमय दरों के विषय में शीघ्र सूचना।

10.12.2 शून्य शेष लेखे (Zero Balance Account)—प्रभावी रोकड़ प्रबन्ध के लिए कुछ फर्म शून्य शेष लेखों के प्रयोग से रोकड़ के लिए बाजारीकृत प्रतिभूतियों को प्रतिस्थापित करने की व्यापक नीति का प्रयोग करती हैं। प्रत्येक दिन के कुल भुगतानों के लिए लेखों के विरुद्ध चेक उपस्थित हो जाता है। बाजारीकृत प्रतिभूतियों को क्रय करने के लिए फर्म रोकड़ की शेष राशि, यदि है तो, को लेखों में हस्तान्तरित कर देती है। रोकड़ की कमी की स्थिति में फर्म बाजारीकृत प्रतिभूतियों का विक्रय कर सकती है।

10.12.3 मुद्रा बाजार परिचालन (Money Market Operations)—बड़ी कम्पनियों के “कोषागार कार्य” में से एक कार्य कोषों के आधिक्य को मुद्रा बाजार में विनियोजित करना है। मुद्रा बाजार बैंकिंग की एक महत्वपूर्ण विशेषता आकार की है। बैंक मुद्रा बाजार में कम्पनियों, जन-सत्ताओं, उच्च नेटवर्क विनियोगी तथा अन्य बैंकों के साथ प्रतियोगिता करके कोष एकत्र करते हैं। जमा विशेष अवधि के लिए किये जाते हैं, रात्रि भर से लेकर एक वर्ष तक के लिए। उच्च प्रतियोगी दर जो कि दैनिक माँग व पूर्ति को प्रतिबिम्बित करती है, यह घण्टों के आधार पर भी हो सकती है, उद्धृत की जाती है। परिणामस्वरूप दर सर्वथा नाटकीय रूप से परिवर्तित हो सकती है, विशेष रूप से लघु अवधि के जमा के लिए। इस प्रकार आधिक्य कोष मुद्रा बाजार में सरलता से विनियोजित किये जा सकते हैं।

10.12.4 फुटकर रोकड़ की पेशगी प्रणाली (Petty Cash Imprest System)—रोकड़ पर अच्छे नियन्त्रण के लिए सामान्यतः कम्पनियाँ फुटकर रोकड़ की पेशगी प्रणाली का प्रयोग करती हैं, जहाँ दैनिक फुटकर व्ययों को भूतकालीन अनुभव तथा भविष्य की आवश्यकताओं के आधार पर अनुमानित किया जाता है तथा रोकड़ को साप्ताहिक आवश्यकता के फुटकर व्ययों को करने के लिए पृथक रखा जाता है। पुनः अगला सप्ताह पूर्वनिर्धारित शेष के साथ आरम्भ होता है। यह प्रबन्ध तन्त्र के ऊपर फुटकर व्ययों के प्रबन्ध करने के तनाव को कम करता है तथा रोकड़ का प्रबन्ध कुशलतापूर्वक करने में सहायता करता है।

10.12.5 अल्पकालिक रोकड़ आधिक्य का प्रबन्ध (Management of Temporary Cash Surplus)

अल्पकालिक रोकड़ आधिक्य लाभदायकता के साथ निम्नलिखित में विनियोजित किये जा सकते हैं—

- बैंकों व वित्तीय संस्थाओं में अल्पकालीन जमा।
- अल्पकालीन ऋण बाजार के यन्त्र।
- दीर्घकालीन ऋण बाजार के यन्त्र।
- ब्लू चिप सूचीकृत कम्पनियों के अंश।

10.12.6 इलेक्ट्रॉनिक रोकड़ प्रबन्ध प्रणाली (Electronic Cash Management System)

आजकल अधिकांशतः रोकड़ प्रबन्ध प्रणालियाँ इलेक्ट्रॉनिक पर आधारित होती हैं चूँकि गति किसी भी रोकड़ प्रबन्ध प्रणाली का सार होती है। किसी भी रोकड़ प्रबन्ध प्रणाली में आँकड़ों का इलेक्ट्रॉनिक आधार पर स्थानान्तरण साथ ही साथ कोषों का भी स्थानान्तरण महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। रोकड़ प्रबन्ध में विभिन्न तत्व सैटेलाइट के माध्यम से जुड़े होते हैं। वह अनेक जगह इन्टरलिंक हो सकती हैं जहाँ अनेक लेखपत्र एकत्रित किए जाते हैं, वह जगह जहाँ रोकड़ कम्पनी के खाते में हस्तांतरित की जाती है, वह जगह जहाँ भुगतान हस्तांतरित होता है आदि।

कुछ नेटवर्क पर आधारित रोकड़ प्रबन्ध प्रणाली तृतीय पक्षकार को बहुत सीमित प्रवेश की अनुमति दे सकती है, जैसे कम्पनी के साथ जिन पक्षकारों के प्राप्ति व भुगतान के व्यवहार बहुत ही नियमित रूप से होते हैं, आदि। एक वित्तीय कम्पनी जो जनता से जमा उप-दलालों के माध्यम से जमा स्वीकार कर रही है, उप-दलालों को एकत्रण की जाँच के लिए सीमित प्रवेश दे सकती है जो कि उनके द्वारा अपने कमीशन के माध्यम से किया जाता है।

इलेक्ट्रॉनिक वैज्ञानिक रोकड़ प्रबन्ध निम्न परिणाम देता है—

- समय की महत्वपूर्ण बचत।
- ब्याज की लागत में कमी।
- कम कागजी कार्य।
- वृहद् लेखांकन शुद्धता।
- समय तथा कोषों पर अधिक नियन्त्रण।
- इलेक्ट्रॉनिक भुगतान को सहारा देना।
- एक स्थान से दूसरे स्थान, जहाँ आवश्यक हो, कोषों का तीव्रता से हस्तान्तरण।
- विभिन्न लेखपत्रों का रोकड़ में शीघ्र परिवर्तन।
- जहाँ पर एवं जब भी कोषों की आवश्यकता हो उसे उपलब्ध कराना।
- राशि के व्यर्थ प्लोट को अधिकतम सम्भावित सीमा तक कम करना।
- इस बात से सन्तुष्ट होना कि संगठन में किसी भी स्थान पर कोई व्यर्थ कोष नहीं है।
- यह कोष के अन्तर-बैंकिंग सन्तुलन को अधिक सरल बनाती है।
- यह केन्द्रीकृत 'रोकड़ प्रबन्ध' का सही प्रारूप है।
- यह इलेक्ट्रॉनिक समाधान को तीव्रता से सम्पन्न करता है।
- पुस्तपालन की त्रुटियों को ढूँढने की आज्ञा देना।
- चेक निर्गमन की संख्या को कम करना।
- ब्याज की आय अर्जित करना और ब्याज के व्यय कम करना।

10.12.7 वर्चुअल बैंकिंग (Virtual Banking)

उन्नीसवीं शताब्दी में बैंकिंग व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। जहाँ एक ओर बैंक ग्राहकों के आधार तथा सम्बन्धों को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रही है और अधिक से अधिक सम्बन्ध बैंकिंग (Relationship Banking) को अपना रही है, वहीं ग्राहक रूढ़िवादी शाखा बैंकिंग सीमा से क्रमशः दूर जा रहे हैं और दूरस्थ इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग सेवाओं की सुविधाओं को खोजते हैं। इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग की वृहद् सीमाओं के अन्तर्गत वर्चुअल बैंकिंग ने महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त की है।

अति विस्तृत रूप से वर्चुअल बैंकिंग, बैंकिंग की व्यवस्थाओं तथा उससे सम्बन्धित सेवाओं को सूचना-प्रौद्योगिकी के विस्तृत प्रयोग के आधार पर ग्राहकों के द्वारा बैंक से प्रत्यक्ष व्यवहार के बिना प्रदान करते हैं। वर्चुअल बैंकिंग का उद्गम विकसित देशों में ऑटोमैटेड टेलर मशीनों की स्थापना के साथ सत्रहवीं शताब्दी में हुआ। इसके पश्चात प्रतियोगी बाजार पर्यावरण के साथ-साथ विभिन्न तकनीकों तथा ग्राहकों के दबाव के कारण अन्य प्रकार की वर्चुअल बैंकिंग सेवाएँ पूरे विश्व में तेजी के साथ विकसित हो रही हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक अनेक प्रारम्भिक कदम ले चुकी है, जो कि व्यापारिक बैंकों को परिष्कृत रोकड़ प्रबन्ध प्रणाली में सक्रिय रूप से सम्बद्ध होने की सुविधा प्रदान करेगी। एक देश में कोषों के तीव्र एवं विश्वसनीय वेग को सुनिश्चित करने के लिए पूर्व आवश्यकताओं में से एक आवश्यकता कुशल भुगतान

व्यवस्था का होना है। अर्थव्यवस्था में भुगतान प्रणाली में वेग के महत्व को ध्यान में रखते हुए, भारतीय रिजर्व बैंक अठारहवीं शताब्दी के मध्य से देश की भुगतान मशीनरी को सामर्थ्यवान बनाने के लिए अनेक उपाय ले चुकी है।

समाशोधन व्यवहारों को कम्प्यूटरीकरण से निपटाना मैग्नेटिक इंक कैरेक्टर रिकगनीशन तकनीक, (MICR) अन्तर-शहरी समाशोधन सुविधाओं का प्रावधान तथा उच्च मूल्य समाशोधन सुविधाएँ, इलेक्ट्रॉनिक समाशोधन सेवा स्कीम (ECSS), इलेक्ट्रॉनिक कोष हस्तान्तरण स्कीम (EFT), सरकारी प्रतिभूतियों के व्यवहार हेतु सुपुर्दगी बनाम भुगतान (DVP) भारतीय वित्तीय नेटवर्क (INFINET) की स्थापना महत्वपूर्ण विकासों में से एक है।

केन्द्रीकृत कोष प्रबन्ध प्रणाली (CFMS), प्रतिभूति सेवा प्रणाली (SSS), वास्तविक समय सकल निपटारा प्रणाली (RTGS) तथा ढाँचागत वित्तीय संदेशन प्रणाली (SFMS) इत्यादि एजेण्डे के अन्य उच्च प्राथमिकता वाली मदें हैं जो कि वर्तमान में प्रचलित प्रणाली को भारत में स्टेट ऑफ आर्ट भुगतान संरचना में रूपान्तरित कर रहे हैं।

भुगतान प्रणाली को सुधारने के तरीकों में वर्तमान परिदृष्टि यह है, जो कि कम से कम सभी महत्वपूर्ण बैंक की शाखाओं को घरेलू भुगतान प्रणाली के नेटवर्क के साथ जोड़ा जाये जिससे कि सीमा पार जुड़ाव हो सके। भारत में पहले से ही स्थापित व्यवस्था तथा व्यवस्थाएँ जो आ रही हैं, की सहायता से बैंक व कॉरपोरेट दोनों रोकड़ प्रबन्ध पर प्रभावपूर्ण नियन्त्रण की कार्यवाही कर सकते हैं।

वर्चुअल बैंकिंग सेवाओं के लाभ निम्नलिखित हैं—

- व्यवहारों को करने की कम लागत।
- ग्राहकों की आवश्यकताओं के प्रतिउत्तर की बढ़ी हुई गति।
- शाखा परिचालन नेटवर्क की कम लागत साथ ही स्टाफ की लागत में कमी जो लागत की कुशलता को प्रेरित करती है।
- वर्चुअल बैंकिंग सुधरी हुई एवं विस्तृत सेवा की सम्भावनाओं को ग्राहकों के लिए तेजी से, शुद्धता से एवं उनकी सुविधा से उपलब्ध कराती है।

वर्चुअल बैंकिंग सेवाओं ने ग्राहकों के मध्य जो लोकप्रियता अर्जित की है, वह इन सेवाओं की गति, सुविधा और पूरे दिन सम्पर्क के कारण है।

10.13 विपणन योग्य प्रतिभूतियों का प्रबन्ध (Management of Marketable Securities)

विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ रोकड़ के विनियोग का एक अभिन्न अंग हैं चूँकि यदि विनियोग का चुनाव सही तरीके से किया जाए तो यह तरलता व रोकड़ दोनों ही उद्देश्यों को पूरा कर सकता है। चूँकि कार्यशील पूँजी आवश्यकताएँ उच्चावचन वाली होती हैं, आधिक्य कोषों को कुछ लघु अवधि प्रतिभूतियों में लगाना सम्भव है, जो कि जब भी रोकड़ की आवश्यकता पड़े तरलीकृत की जा सकती है। प्रतिभूतियों का चयन तीन सिद्धान्तों द्वारा निर्देशित होना चाहिए—

- **सुरक्षा (Safety)**—प्रतिफल व जोखिम साथ-साथ चलते हैं। चूँकि इस विनियोग में उद्देश्य तरलता को सुनिश्चित करना होता है, अतः न्यूनतम जोखिम चयन का आधार होता है।
- **परिपक्वता (Maturity)**—परिपक्वता व पूर्वानुमानित रोकड़ आवश्यकताओं के मध्य मिलान करना आवश्यक है। दीर्घावधि प्रतिभूतियों के मूल्य में ब्याज दरों में परिवर्तन के साथ ज्यादा उच्चावचन होता रहता है अतः यह अधिक जोखिमपूर्ण है।

- **विपणन योग्यता (Marketability)**—इसका अभिप्राय है—सुविधा, गति व लागत जिस पर कोई प्रतिभूति रोकड़ में परिवर्तित की जा सकती है। यदि प्रतिभूति को ही बिना समय और कीमत खोए तुरन्त बेचा जा सकता है तो यह उच्च तरल या विपणन योग्य है।

विपणन योग्य प्रतिभूतियों का चयन मुख्यतः सरकारी ट्रेजरी बिलों, बैंकों के पास निक्षेप व अन्तर-कम्पनी निक्षेपों तक ही सीमित है। भारतीय यूनिट ट्रस्ट के यूनिट्स व कम्पनियों के वाणिज्यिक प्रपत्र सहयोगी कम्पनियों या सम्बन्धित कम्पनियों के साथ निक्षेप सहित कम्पनियों के लिए आधिक्य कोषों को लगाने के अन्य आकर्षक साधन हैं।

इसके अतिरिक्त मुद्रा बाजार के म्यूचुअल फण्ड (MMMFs) अल्प अवधि के विनियोग के क्षेत्र के रूप में उभर कर आये हैं। वे अल्पकालीन विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ, जैसे कोषागार, बिल, जमाओं के वाणिज्यिक पेपर प्रमाणपत्र अथवा याचना मुद्रा बाजार पर केन्द्रण करते हैं। इनमें 30 दिन की लॉक अवधि होती है, जिसके पश्चात विनियोग को रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता है। वे आकर्षक आय प्रस्तावित करते हैं तथा विनियोक्ताओं और कुछ बड़ी कम्पनियों के साथ काफी लोकप्रिय हैं।

उदाहरण (Illustration) 11

साई ट्रेडिंग कम्पनी के सम्बन्ध में निम्न सूचनाएँ उपलब्ध हैं—

- औसतन, देनदार 45 दिनों बाद वसूल होते हैं, स्टॉक की औसत धारण अवधि 75 दिन है और लेनदारों की भुगतान अवधि औसतन 30 दिन है।
 - फर्म स्थायी दर से कुल ₹ 120 लाख वार्षिक व्यय करती है।
 - यह विनियोग पर 10% अर्जित करती है।
- उपर्युक्त सूचनाओं से आपको गणना करनी है—
- रोकड़ चक्र एवं रोकड़ आवर्त,
 - भुगतान जब भी वे देय हों, को करने के लिए रखे जाने वाले रोकड़ की न्यूनतम राशि,
 - औसत स्टॉक धारण अवधि 30 दिन से घटाने पर बचत।

हल (Solution)

- रोकड़ चक्र (Cash cycle) = 45 days + 75 days – 30 days = 90 days (3 months)
रोकड़ आवर्त (Cash turnover) = 12 months (360 days)/3 months (90 days) = 4
- न्यूनतम परिचालन रोकड़ (Minimum operating cash) = Total operating annual outlay/
cash turnover, अर्थात् ₹ 120 lakh/4 = ₹ 30 lakh
- रोकड़ चक्र (Cash cycle) = 45 दिन + 45 दिन – 30 दिन = 60 दिन (2 माह),
रोकड़ आवर्त (Cash turnover) = 12 माह (360 दिन)/2 माह (60 दिन) = 6.
न्यूनतम परिचालन रोकड़ (Minimum operating cash) = ₹ 120 लाख/6 = ₹ 20 लाख.
विनियोग में कमी (Reduction in investments) = ₹ 30 लाख – ₹ 20 लाख = ₹ 10 लाख
बचत (Saving) = 0.10 × ₹ 10 लाख = ₹ 1 लाख

□□